Bhasha Vigyan aur Bhasha Shikshan

Interview of Prof. Ramakant Agnihotri

Shiksha Vimarsh Sept-Oct 2006

READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR NMRC, JNU & EKLAVYA,BHOPAL BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

December 2011

भाषा-विज्ञान और भाषा शिक्षण

इस साक्षात्कार में प्रोफेसर अग्निहोत्री ने भाषा-विज्ञान एवं उसके अलग-अलग पहलू, स्कूलों में भाषा-शिक्षण, बहुभाषिता इत्यादि मुद्दों पर चर्चा की है.

<u>भाषा-विज्ञान - आम धारणाऐं</u>

भाषा-विज्ञान का सबसे अहम देन जो रहा है वह ये कि सारी भाषाऐं एक है. भाषा को लेकर कुछ आम धारणाऐं बनी हुई है जो कि गलत है. लोग ऐसा समझते हैं कि भोजपुरी या मैथिली में गणित या विज्ञान करना संभव नहीं है, इन सब विषयों के लिये अंग्रेज़ी या जर्मन ज़्यादा ठीक है. भाषा-वैज्ञानिकों ने ये दिखा दिया है कि भाषाओं की अपने-आप कोई क्षमता नही होती कि कुक्ष भाषाऐं कुछ काम अच्छा करे जैसे कि कविता और गीत और कुछ भाषाऐं विज्ञान. ये तो करने वाले पर निर्भर करता है कि उसे विषय और भाषा का ज्ञान कितना है. जिसे विज्ञान कि सही समझ है वो किसी भी भाषा में विज्ञान कर सकता है. ऐसी धारणाओं के पीछे राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक कारण होते हैं. इन्हीं सब कारणों के लिये ही कुछ भाषाओं को भाषा का दर्जा मिलता है जबकी कुछ भाषाओं को बोली का.

एक वक्त ऐसा था जब ओड़िया को बांग्ला की बोली मानी जाती थी. ये उस वक्त की बात है जब बांग्ला भाषी लोग ओड़िशा में उँचे पदों पर कार्यरत थे. इस स्थिति को बदलने के लिये ओड़िया भाषियों को कई आन्दोलन करने पड़े.

भाषा की समझ में भाषा विज्ञान का योगदान

भाषा विज्ञान का एक बड़ा योगदान यह रहा है कि अब हम जानते हैं कि भाषाऐं नियमबद्ध होती हैं. हर स्तर पर यह बात सच है चाहे वो शब्द संरचना हो, ध्वनि या वाक्य. जब हम बात करतें हैं तब हमें यह कभी नहीं लगता कि हम किसी नियम का पालन कर के बात कर रहें है. एक नही बल्कि कई नियमों को मानकर बात कर रहें हैं. यह बात हर भाषा पर लागू होती है, सभी भाषाऐं नियमबद्ध तरीके से चलती हैं.

भाषा के नियमों मे अर्थव्यवस्था (इकॉनॉमी) और उत्कृष्टता (एलिगेंस)

भाषा के नियमों में अर्थव्यवस्था और उत्कृष्टता का मतलब यह है कि भाषा के नियम वे ही अच्छे माने जायेंगे जो स्पष्ट हो एवं संक्षिप्त हो. नियम ऐसा हो जो सरलता से और संक्षिप्त तरीके से भाषा के संपूर्ण पहलू का बयान कर सके. मान लीजिये आपको कम्प्यूटर से हिन्दी बुलवाना है. अब आप उसे ये बतायेंगे कि हिन्दी के क्रिया में किस तरह स्त्रीलिंग और पुल्लिंग बनाये जाते हैं. या तो आप हर एक क्रिया का रूप दे सकते हैं कि - खाता-खाती, जाता-जाती; तो ये एक लंबा चौड़ा नियम का रूप लेगा जिसे दो-तीन पन्नों में लिखना पड़ेगा. या फिर आप सिर्फ ये कहें कि जब पुल्लिंग एक वचन कर्ता हो तो क्रिया में *ता* लगाया जाता है और स्त्रीलिंग एक वचन कर्ता हो तो क्रिया में *ती* लगाई जाती है. बस एक ही पंक्ति में आप ने पूरे भाषा का नियम दे दिया. और ये नियम ऐसा बना है कि कम्प्यूटर इसके अलावा कुछ और को अग्राह्य कर देगा.

भाषा विज्ञान एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से

इस दौर के भाषा वैज्ञानिक विज्ञान की तरह ही भाषा विज्ञान का अध्ययन करते हैं. जहां भाषा के चुनिन्दे निदर्शों को सामाजिक परिवेश से अलग करके देखा जाता है. जिस तरह

विज्ञान में भी होता है. मान लीजिए कि कोई जीव वैज्ञानिक गुलाब के खास गुणों पर शोध कर रहीं है. तो वह दुनिया के हर गुलाब के पौधों का जाँच तो नहीं करेंगी. वे अलग-अलग तरह के नमूनों को अपने प्रयोगशाला में लाकर उन पर काम करेंगी. इसी तरह भाषा विज्ञान में कुछ खास नमूनों को लेकर काम किया जाता है.

भाषा विज्ञान के इन नमूनों को हम *कॉम्पिटेन्स* यानी कि भाषायी क्षमता कहेंगे. यह नमूने हमारे भाषा का ज्ञान है -- वह ज्ञान जो हमें यह बताता है कि हम जिस भाषा में बात कर रहें हैं उसमें क्या बोलना सही है और क्या गलत. यह ज्ञान हमारी *परफॉरमेन्स* यानी भाषायी निष्पादन से अलग है. उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि किसी को एक पुरस्कार जीतने पर मंच पर जाकर कुछ शब्द कहने हैं. वह मन में एक बहुत अच्छा भाषण तैयार करके जाता है पर मंच पर पहुँच कर थोड़ा भावुक होकर, थोड़ा घबरा कर वह सिर्फ 'धन्यवाद' कह पाता है. 'धन्यवाद' भाषायी निष्पादन हुआ. यह उसकी क्षमता की सही पहचान नही है. क्योंकि भाषायी निष्पादन में भाषा के अलावा और भी चीज़ें आ मिलती है, जैसे कि घबराना इत्यादि, तो भाषा वैज्ञानिक केवल भाषायी क्षमता का ही अध्ययन करते है.

एक और उदाहरण लीजिये ऐसे कई वाक्य हैं जो हम कभी नहीं बोलते जैसे कि --

राम ने आज खाना खाया और पानी पीया और फिर पेड़ के नीचे बैठा जिस पेड़ पर पिछले साल बहुत आम लगे थे जो आम मुहल्ले के बच्चों ने झील के किनारे वाले चबूतरे पर बैठकर खाये जिस चबूतरे पर एक पत्थर की मूर्ती है जो पास के गांव के मूर्तीकार ने बनायी है.

इतने लंबे वाक्य हम बोलने लिखने में इस्तेमाल कम करते हैं. जो सुन रहा होगा वह

वाक्य खत्म होने से पहले भूल चुका होगा कि बात कहां से शुरू हुई थी, और पढ़ने वाले को भी इस वाक्य को समझने के लिये दो-चार बार इसे पढ़ना होगा. पर इस तरह के वाक्य संभव हैं और सही भी है और किसी कारणवश अगर हमें बोलना पड़े तो हम बोल भी लेंगे. ऐसे वाक्य हमारी भाषायी क्षमता के निदर्शन है भले ही हमारे भाषायी निष्पादन में ऐसे वाक्य दिखते नहीं है.

अगर भाषा वैज्ञानिक केवल निष्पादन का अध्ययन करते तो वे इस बात को नज़रअन्दाज़ कर देते कि लोग ये वाक्य बोल सकते हैं और इसे समझा भी जा सकता है. इसलिये अध्ययन के दृष्टिकोण से जो हम बोलते हैं उससे ज़्यादा ज़रूरी है हमारी मानसिक क्षमता.

<u>सार्वभौमिक व्याकरण</u>

पिछले कुछ दशकों से भाषा के अध्ययन का विषय सार्वभौमिक व्याकरण रहा है. यह वह व्याकरण है जो हर इंसान में जन्मजात होता है. इस व्याकरण को अगर हम पाठ्यपुस्तक के व्याकरण जैसा समझे तो गलत होगा. हम कह सकते है कि इस व्याकरण में भाषायी व्यवस्था के वे सिद्धांत है जो सभी भाषाओं में मौजूद है. यह सिद्धांत क्या है इस पर शोध जारी है पर हम यह कह सकते हैं कि कुछ इस प्रकार के सिद्धांत है जैसे हर भाषा के वाक्यों में संज्ञा और क्रिया होते हैं.

सार्वभौमिक व्याकरण के पीछे जो सोच है वो यह है कि जब बच्चा भाषा सीखने की उम्र का होता है तो उसके आस-पास जो भी भाषा बोली जायेगी वो सीख लेगा. उसे सिखाने की ज़रूरत नही पड़ेगी. चाहे हिन्दी हो या चाइनीज़ बच्चा सीख लेगा. ये इसलिये संभव है क्योंकि बच्चा सार्वभौमिक व्याकरण लेकर पैदा होता है. सार्वभौमिक व्याकरण भाषा सीखने की प्रक्रिया का पहला पड़ाव है

सार्वभौमिक व्याकरण के अवधारणा के आने से पहले भाषा-वैज्ञानिक अलग-अलग भाषा के अध्ययन में लगे हुए थे. वे इन भाषाओं को समझ कर इनकी व्याख्या करते थे. सार्वभौमिक व्याकरण के अवधारणा के आने पर भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन हुए. भाषा के मानसिक पहलुओं पर नज़र डाली जाने लगी. लोग अलग-अलग भाषा पर ध्यान देने के बजाय भाषाओं के सार्वभौमिक सिद्धांतो को समझने की कोशिश करने लगे.

<u>भाषा अर्जन</u>

ये काफी आश्चर्य कर देने वाली बात है कि एक तीन-चार साल का बच्चा कितना कुछ बोल और समझ लेता है. इतने कम समय में बच्चा इतना कैसे सीख जाता है? हम ये समझते है कि बच्चा अपने आस-पास के लोगों को बोलते सुनकर सीख गया है. यह कुछ हद तक सच है पर सोचिए असल में बच्चे के साथ कितनी बातचीत की जाती है? कुछ संस्कृतियों में तो बड़े बच्चों के साथ बात ही नहीं करते. फिर भी बच्चा अपनी भाषा हासिल कर लेता है

आजकल जब टी.वी से दूर रहना मुश्किल है, आप देखेंगे कि अहिन्दी भाषी कन्नड या बंगाली बच्चे बड़ी अच्छी हिन्दी बोल लेते हैं सिर्फ *छोटा भीम* इत्यादि सीरियल देख देख के. उनकी भाषा सीरियल के संवाद तक सीमित नहीं रहती बल्कि वे हिन्दी भाषियों के साथ
ऐसे आसानी से हिन्दी बोल लेते हैं जैसे कि उनकी परवरिश हिन्दी भाषी परिवार में हुई हो.

चार साल का बच्चा कहानियाँ सुना सकता है, भाषा का सृजनात्मक इस्तेमाल कर सकता है. उसे ये मालूम होता है कि बड़ों से कैसे बात की जाती है और बच्चों से कैसे बातचीत कर सकते है अगर बच्चे का सीखना केवल उसके आस-पास के परिवेश से होता तो वह

इतनी जल्दी यह सब नहीं सीख पाता. घर के बड़े उससे दिन भर बतियाते नहीं है, बच्चे को खाना-पीना, सोना, खेलना होता है. बड़े अपने काम में व्यस्त होते है. जब बच्चों से बात भी की जाती है तो बड़े कुछ बोलते-बोलते कुछ और बोलने लगते हैं, इत्यादि.

बच्चे अपनी भाषा आस-पास से ज़रूर सीखते है पर इसे सीखने की उनमें अन्दरूनी क्षमता होती है भाषा के नियमों का अन्दरूनी ज्ञान होता है जिसका इस्तेमाल कर वह भाषा सीखता है. आप खुद ही सोचिये क्या आप को मालूम है कि *प* और *ब* में क्या अंतर है? आप अपनी भाषा में नकारात्मक वाक्य या प्रश्नवाचक वाक्य कैसे बनायेंगे? अगर बड़े खुद नहीं जानते तो वे बच्चों को कैसे सिखायेंगे. ऐसा नहीं है कि बच्चे बिना गलती किये सब सीख जाते हैं पर कुछ गलतियाँ वे कभी नही करते. अब नकारात्मक वाक्यों को ही लीजिये --

बच्चे मैदान में खेल रहे है

इस वाक्य को नकारात्मक बनाने के लिये हमें खेल से पहले *नहीं* लगाना होगा.

बच्चे मैदान में नहीं खेल रहे हैं

अब इस वाक्य को हम कुछ जटिल कर देते है --

बच्चे मैदान में जो की शालीमार बाग में है, जो की दिल्ली में है, जो कि भारत में है जो कि एशिया में है, जो कि विश्व में है, खेल रहे है.

चाहे आप वाक्य को जितना भी बड़ा बना दे कोई भी हिन्दी भाषी बच्चा ये गलती नही

करेगा कि *नहीं* गलत जगह पर लगाये. वे नहीं को खेल के पहले ही लगाएगा. बिना बताये ही बच्चे नियम पकड़ लेते है. ये बच्चे की जैविक क्षमता ही है जो उसे भाषा के कठिन नियमों को हासिल कराती है.

इस क्षमता को जांचने के लिये कुछ प्रयोग किये गये. एक वक्त था कि यह विश्वास किया जाता था कि पैदा होते समय बच्चे का दिमाग एक खाली स्लेट की तरह होता है. इन प्रयोगों से दिखता है कि ऐसा नहीं है. ये प्रयोग नवजात शिशुओं पर किये गये.

जापानी भाषी वयस्क [र] और [ल] ध्वनियों में फर्क नही करते. वे दोनो ध्वनियों को [र] ही बोलते है. जापानी नवजात शिशुओं पर प्रयोग से देखा गया कि वे [र] और [ल] का अन्तर कर रहे हैं.

इसी तरह अंग्रेज़ी भाषी वयस्क [ट] और [त] में अन्तर नहीं करते जबकी उनके नवजात शिशुओं को ये ध्वनियां सुनाई देती है.

करीब छह महीने की उम्र से बच्चा अन्तर करना बन्द कर देता है और अपने भाषा के ध्वनियों को हासिल करने लगता है.

<u>बहुभाषिता</u>

बच्चे केवल एक भाषा सीखने की क्षमता ही नही रखते. वे एक साथ तीन से चार भाषाऐं सीख सकते हैं. द्विभाषी बच्चों पर प्रयोगों में देखा गया है कि वे दोनों भाषाओं के शब्द संरचना, वाक्य संरचना एक ही साथ सीखते है और इससे उनके भाषा सीखने में कोई अड़चन नहीं आती. केवल ये ही नहीं ढाई-तीन साल के उम्र के होते-होते वे ये समझ जाते हैं कि किसके साथ कौनसी भाषा में बात करनी चाहिये.

1930 से 1960 के दौरान ये मान्यता थी कि एक साथ तीन-चार भाषाऐं सीखने से बच्चे के भाषा के विकास में बुरा प्रभाव पड़ता है. जब शिक्षक देखते थे कि बच्चा दो भाषा मिलाकर बात कर रहा है तो वे एक भाषा इस्तेमाल करने की सलाह देते थे. पर आजकल ऐसा नहीं माना जाता. बच्चे का दो भाषा मिलाकर बात करना उसके बहुभाषी होने का एक पड़ाव है और बच्चा बहुत जल्द ही दोनों भाषाऐं अलग करके बोलने लगता है.

पिछले दशकों के मान्यता के विपरीत अब ये माना जाता है कि बहुभाषिता सीखने की प्रक्रिया को ज़्यादा सशक्त बनाती है. इसका ये मतलब नहीं कि बहुभाषिता और पढाई-लिखाई में कोई सीधा संबंध है. होता ये है कि बहुभाषी होने से बच्चे का अलग-अलग संस्कृतियों से परिचय होता है, ज्यादा लोगों से बातचीत होती है, उसके मानसिक दुनिया का प्रसार होता है. इसका असर उसके सीखने पर भी पड़ता है.

एक प्रयोग में कुछ बच्चों को पेपर क्लिप पर निबंध लिखने को दिया गया. देखा गया कि बहुभाषी बच्चों ने एक भाषी बच्चे से ज़्यादा अच्छा लिखा.

<u>भाषा-विज्ञान और भाषा शिक्षण</u>

भाषा-विज्ञान के पास भाषा-शिक्षण के लिये कोई बने बनाये नुस्खें नहीं है. परन्तु भाषा विज्ञान में जो भाषा अर्जन के पहलुओं को समझने की कोशिश की गई है उसका भाषा शिक्षण में सदव्यवहार किया जा सकता है.

<u>स्कूलों में भाषा-शिक्षण</u>

जब बच्चे स्कूलों में प्रवेश करते हैं तो उन्हें वर्णमाला और व्याकरण सिखाया जाता है. ये

केवल बेकार ही नहीं बल्कि इसका असर प्रतिकूल ही होता है क्योंकी बच्चों की भाषा-शिक्षण में कोई दिलचस्पी नहीं रहती.

जब बच्चे खुद से ही अपने भाषा और भाषाओं की ध्वनि संरचना सीख लेते है, जब वे अपने-आप ही वाक्य संरचना सीख लेते है तो उन्हें अ, आ, क, ख से भाषा सिखाने का क्या मतलब है. ये बात भी बिल्कुल गलत है कि पहले वे वर्णमाला सीखे, फिर आसान शब्द, फिर मुश्किल शब्द. क्योंकि जब तक बच्चा प्राइमेरी स्कूल पहुँचता है वह अपने भाषा के शब्दों के साथ परिचित होता है. ऐसे में अगर उसे शब्द और चित्र दिखाये जाये तो उसे अपने-आप लिपि की पहचान हो जायेगी, वह खुद से ही सीखने लगेगा.

जब बच्चा खुद से ही एक नही, एक से ज़्यादा भाषाऐं सीख सकता है तो वह लिखना-पढ़ना भी आसानी से सीख सकता है अगर उसे प्रोत्साहित करने वाला वातावरण दिया जाय. स्कूलों में प्रचलित लिखना-पढ़ना सिखाने की विधि उसकी शिक्षा में बाधा ही सृष्टि करते है.

****

अभ्यास के लिये --

1)
ब्लिंग
ब्रिंट
दगदी
भेउ

बेतवा

स्ट्रायन

हैग्रिड

कढ़म

भोंगिर

मान लीजिये कि ये शब्द जगहों के नाम है. आप को इन नामों से ये अन्दाज़ लगाना है कि कौन से जगह इंग्लैंड के हैं और कोन से उत्तर भारत के.

2)

a) एक प्रशनवाचक वाक्य बनाइये अब उसमें से प्रशनवाचक शब्द को वाक्य के अलग-अलग हिस्से में लगाकर देखिये और बताइए किस जगह पर प्रश्नवाचक शब्द बिल्कुल गलत लग रहा है.

b) इसके आधार पर एक नियम लिखिये और इस नियम को दस और वाक्यों पर लगाकर दिखाइये कि नियम सही बना है.

3)

निरमा से दूध सी सफेदी आये

इस वाक्य से निम्नलिखित वाक्य ज़्यादा असरदार है

दूध सी सफेदी निरमा से आये

विज्ञापनों में इस तरह के वाक्य काफी इस्तेमाल किये जाते है. ऐसे पाँच और वाक्य ढूंढिये और ये बताइये कि इन सब वाक्यों में क्या किया जा रहा है (कौन सा हिस्सा बदला जा रहा है)

4)

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिये. बांये तरफ हिन्दी के शब्द हैं और दाहिने तरफ बांग्ला के.

दोनों लिपियों में लिखे गये शब्द एक ही है.

बाजार - বাজার

खबर - খবর

दूध - দুধ

शरबत - শরবত

बिहार - বিহার

भूल - ভুল

आधार -আধার

नाम - নাম

इन्हें देखकर क्या आप कुछ बांग्ला अक्षर पहचान सकते हैं? इसके आधार पर निम्नलिखित बांग्ला शब्दों को हिन्दी लिपि में लिखिये.

হাজার
িবধাতা
দুর
ভূত
শহর
মাখন
জখম

****